RNI No. 20281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 14 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 17 जून, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 14, 14–17 जून 2018 तदनुसार 3 आषाढ़ सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

अकेले जाना होता है

लेο–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यमस्य लोकादध्या बभूविथ प्रमदा मर्त्यान्प्र युनक्षि धीरः।
एकाकिना सरथं यासि विद्वान्त्स्वप्नं मिमानो असुरस्य योनौ।।

–ऋ. १९।५६।१

शब्दार्थ–हे ज्ञानिन्! **यमस्य** = नियन्त्रणकर्त्ता न्यायकारी भगवान के **लोकात्+अधि** = लोक से, प्रकाश से **आ+बभूविथ** = तू समर्थ हुआ है, तू **धीरः** = धीर होकर **मर्त्यान्** = मनुष्यों को, मरण–धर्माओं को **प्रमदा** = मस्ती से **प्र+युनक्षि** = युक्त करता है। तू **विद्वान्** = विद्वान् **असुरस्य** = असुर=प्राणप्रद के **योनौ** = ठिकाने में **स्वप्नम्+मिमानः** = सपने लेता हुआ **सरथम्** = रमण–साधनों=कृतकर्मों की वासनाओं के साथ **एकाकिना** = अकेला ही **यासि** = जाता है।

व्याख्या–इस मन्त्र में कई मार्मिक बातें कही गई हैं–

(१) मनुष्य को बताया गया है तू कहाँ से आया है ? **'यमस्य लोकादध्या बभूविथ'** = तू तो न्यायकारी भगवान् के लोक से आया है, अर्थात् इस जन्म–मरण के प्रवाह में पड़ने से पूर्व तू ब्रह्मलोक= मुक्ति में था।

(२) **'प्रमदा मर्त्यान् प्रयुनक्षि धीरः'** = यदि तू धीर हो जाए तो मनुष्यों को आनन्द–सम्पन्न कर सके, अर्थात् मनुष्य का एक कार्य यह भी है कि वह दूसरों को सुखी करे। दूसरों को सुखी करने के लिए बहुत बड़ा धैर्य चाहिए। अधीर, चञ्चल, चपल मनुष्यों में दूसरों को शान्त करने का साहस कहाँ ?

(३) मनुष्य का यह जीवन एक विशाल स्वप्न है। स्वप्न लेता–लेता तू यहाँ से अकेला चला जाएगा। भले मनुष्य! कुछ करेगा भी, अथवा केवल स्वप्न लेता रहेगा, कल्पनाएँ करता रहेगा। स्वप्न की दशा थका देती है, अतः इससे ऊपर उठ। स्वप्न हटने पर स्वप्नदृष्ट कोई भी पदार्थ दीखता नहीं। कार्य में परिणत न हुई कल्पना स्वप्न के समान मिथ्या है।

ये तेरी कल्पनाएँ यहीं रह जाएँगी, तू अकेला जाएगा, साथ होंगी तेरी वासनाएँ। **'एकाकिना सरथं यासि विद्वान्'।** मनु महाराज ने इसी का भाव लेकर कहा है–

एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते।
एकोऽनुभुङ्क्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम्।।

–४।२४०

प्राणी अकेला उत्पन्न होता है, अकेला ही मरता है। अकेला ही सत्कर्मों का फल भोगता है और अकेला ही बुरे कर्मों का।

आगामी आर्य महासम्मेलन बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन **11 नवम्बर 2018** को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। इसलिये पंजाब की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वह इन तिथियों में अपनी अपनी आर्य समाज का कोई कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिये पूरी शक्ति से जुट जाएं। आपके सहयोग से इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलन कर चुकी है। आशा है इस आर्य महासम्मेलन में भी आप का पूरा पूरा सहयोग मिलेगा।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

नामुत्र हि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः।
न पुत्रदारा न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवलः।।

–४।२३९

परलोक में न माता, न पिता, न पुत्र, न कलत्र और न कोई सम्बन्धी सहायता दे सकते हैं। केवल धर्म साथ जाता है। वेद ने जिसे रथ=रमणसाधन कहा है, मनु ने उसे धर्म कहा है। सावधान! मनुष्य सावधान! यह सब सामान यहीं धरा रह जाएगा। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा।
मर्य्य इव स्व ओक्ये।।

–ऋ० १.९१.१३

भावार्थ–हे जगदीश्वर! जैसे गौ आदि पशु अपने खाने योग्य घासादि पदार्थों में उत्साहपूर्वक रमण करते हैं मनुष्य अपने घरों में आनन्द से रहते हैं। ऐसे ही भगवन्! आप मेरे हृदय में रण करें, अर्थात् मेरे आत्मा में प्रकाशित हूजिये, जिससे मैं आपको यथार्थ रूप से जानता हुआ अपने जन्म को सफल बनाऊँ।

अस्माँ अवन्तु ते शतमस्मान्त्सहस्रमूतयः।
अस्मान् विश्वा अभिष्टयः।।

–ऋ० ४.३१.१०

भावार्थ–हे दयामय परमात्मन्! आपकी सैकड़ों और हजारों रक्षायें हमारी रक्षा करें। भगवन्! आपके दिये हुए अनेक मनोवाञ्छित पदार्थ, हमारी रक्षा करें। ऐसा न हो कि, हम अनेक पदार्थों को प्राप्त होकर, आपसे विमुख हुए, उन पदार्थों से अनेक उपद्रव करके पाप के भागी बन जायें, किन्तु उन पदार्थों को संसार के उपकार में लगाते हुए आपकी कृपा के पात्र बनें।

मुक्ति के साधन जितेन्द्रियता एवं ईश्वर आराधना-ऋग्वेद

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति होना चाहिए।

ऋग्वेद मण्डल 10 के सूक्त 67 एवं 68 में इस विषय में मुक्ति प्राप्ति के लिए ईश्वर आराधना, जितेन्द्रियता तथा वेदानुकूल जीवन यात्रा आवश्यक है। परमात्मा ने हमें वेद का ज्ञान भी इसीलिए दिया है।

इमां धियं सप्त शीर्ष्णीं पिता न ऋतप्रजातां बृहतीमविन्दत।
तुरीयं स्विञ्जनयाद्विश्वज-नोऽयास्य उक्थमिन्द्राय शंसन।।
ऋ. 10.67.1

अर्थ-(नः) हमारा पिता परमात्मा (ऋत प्रजाताम्) स्वकीय ज्ञान में विख्यात (सप्तशीर्ष्णीम्) इन सात छन्दों शिरों वाली (इमाम्) इस (धियम्) वेद वाणी को (अविन्दत) प्रकट करता है और वह (विश्व जन्यः) समस्त व्यक्तियों का हितैषी (अयास्यः) मुखस्थ, प्राणवत् जीवना धार होकर (इन्द्राय) तत्वदर्शी आत्मा के प्रति (उक्थम्) वचनोपदेश (शंसत्) करता हुआ (तुरीयं स्वित् जनयत्) तुरीय परम पद को बताता हुआ मुक्ति प्रदान करता है।

भावार्थ-परमपिता परमात्मा स्वकीय ज्ञान के लिए प्रसिद्ध है वह ही सात छन्दों वाली वेदवाणी का उपदेश देता है। परमात्मा संसार के सभी प्राणियों का हितकर्ता है। वही तत्वदर्शी आत्मा के प्रति तुरीय पद को बताता हुआ मुक्ति प्रदान करता है।

ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासोअसुरस्य वीराः।
विप्रं पदमङ्गिरसो दधाना यजस्य धाम प्रथमं मनन्त।।
ऋ. 10.67.2

अर्थ-(ऋतं शंसन्तः) वेद के सत्य ज्ञान का उपदेश करते हुए (ऋतु दीध्यानाः) धर्म-मार्ग का ध्यान करते हुए (दिवः असुरस्य) प्रकाश स्वरूप एवं प्राण प्रभु के (पुत्रासः) पुत्र रूप (वीराः) विविध विद्याओं के उपदेष्टा (अङ्गिरसः) ज्ञानी जन विप्र कहलाते हुए (यज्ञस्य) पूज्य परमात्मा के (प्रथमम्) सर्वश्रेष्ठ (धाम) तेजस्वी धाम को (मनन्त) विचारते और दूसरों को उसका उपदेश करते हैं।

भावार्थ-वेद के सत्यज्ञान का उपदेश करते हुए, धर्म मार्ग का ध्यान करते हुए, प्रकाश स्वरूप एवं प्राण दाता प्रभु के पुत्र रूप ऋषिगण विप्र कहलाते हुए परमात्मा के सर्वश्रेष्ठ तेजस्वी धाम को विचारते हैं और दूसरों को उसका उपदेश भी देते हैं।

विभिद्या पुरं शयथेमपाची निस्त्रीणि साकमुदधेर कृन्तत्।
बृहस्पतिरूषसं सूर्यं गामर्कं विवेक स्तनयन्निव द्यौः।।
ऋ. 10.67.5

अर्थ-वह (बृहस्पतिः) महान् वाणी व शक्ति का पालक वक्ता (शयथ) स्व शरीर में प्राप्त होता हुआ (अपाचीम्) नित्कृष्ट वासना को (ईम् पुरम् विभिद्य) विभिन्न प्रकार से छिन्न-भिन्न करके (साकम्) एक साथ ही (उदधेः) संसार सागर के (त्रीणि) तीन बन्धकों को (निःअकृन्तम्) काट देता है, तब वह (द्यौः स्तनयन् इव) गर्जते हुए मेघ के समान होता है और (उषसम्) उषा (सूर्यम्) सूर्य (गाम्) वाणी एवं (अर्कम्) प्राण तथा अन्न को (विवेद) पाता है।

भावार्थ-महान् वेदवाणी और शक्ति का पालक उपदेशक स्वशरीर में रहता हुआ। निकृष्ट वासना को नाना प्रकार से छिन्न-भिन्न करके एक साथ ही संसार सागर के तीन बन्धनों (पुत्रेषणा, वित्तेषणा और लोकेषणा) को एक साथ काट देता है।

फिर वह प्रभु के आश्रय को प्राप्त कर लेता है।

इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य वि मूर्धानमभिनदर्बुदस्य।
अहन्नहिमरिणात्सप्तसिन्धून्देवैर्द्यावा पृथिवि प्रावतं नः।। ऋ. 10.67.12

अर्थ-(इन्द्रः) राजा (मह्ना) अपनी महत्ता से (महतः अर्णवस्य अर्बुदस्य) महान् ज्ञान के सागर या वाग विषय के श्रेष्ठतम आसीन वेद के ज्ञान को प्रकट करता है। (अहिम् अहन्) मेघ जैसे ज्ञान को ढ़कने वाले अन्धकार को नष्ट करता है (सप्त सिन्धून्) नदी वेग से आगे बढ़ने वाले शत्रु सैन्यों को हटाता है। (दैवेः द्यावा पृथिवी न प्रावतम्) विद्वानों के साथ सभा एवं प्रजा-रक्षा की व्यवस्था करें।

भावार्थ-परमपिता परमात्मा अपनी महत्ता के महान् ज्ञान के सागर वेद को प्रकट करता है। वेद के ज्ञान से अज्ञान-अन्धकार को दूर हटाता है। राजाओं को भी चाहिए कि वे वेद का प्रचार करें जिससे प्रजा का अज्ञान दूर होवे और प्रजा के सुख का मार्ग प्रशस्त होवे।

आस्तिक जन नाना प्रकार से परमेश्वर की वन्दना करते हैं।

उद प्रुतो न वयो रथ माणा वावदतो अभ्रियस्येव घोषाः।
गिरि भ्रजो नोर्मयो मदन्तो बृहस्पतिमभ्य का अनावन्।।
ऋ. 10.68.1

अर्थ-(मदन्त) अति हर्षित (अर्काः) स्तुति कर्ता, भक्तजन (बृहस्पतिम्) महान् ब्रह्माण्ड पालक परमेश्वर की (अनावन्) उत्साह से स्तुति करते हैं (उदप्रुत-वयःन) जैसे जल पर तैरने वाले पक्षी कलख करते हैं या (रक्षमाणाः) खेत के रक्षक किसान पक्षियों को उच्च स्वर से हांका करते हैं जैसे (वावदतः न) शब्दायमान (अभ्रियस्य घोषाः न) मेघ गर्जन होता रहता है जैसे (गिरिभ्रजः ऊर्मय न) पर्वत से घिरी जल धाराएं ध्वनि करती हैं वैसे ही स्तुति करने वाले प्रभु की वन्दना करते हैं।

भावार्थ-आस्तिक जन भगवान् की विभिन्न प्रकार से वन्दना करते हैं। जैसे जल पर तैरते हुए पक्षीगण कलरव करते हैं, खेत का रक्षक किसान पक्षियों को उच्च स्वर से भगाता है, जैसे मेघ गर्जना करते रहते हैं अथवा जैसे पर्वतों से घिरी जल धाराएं ध्वनि करती है।

साध्वर्या अतिथिनीरिषिरा : स्पार्हाः सुवर्णा अनवद्यरूपाः।
बृहस्पतिःपर्वतेभ्यो वितूर्या निर्गा ऊपे यव मिव स्थिविभ्यः।।
ऋ. 10.68.3

अर्थ-जैसे किसान (पर्वतेभ्यो) पर्वतों से (गा) जल की धाराओं को (वि-तूर्य) परिश्रम से काटता है और (यवम् निः ऊपे) जौ आदि अनाज बोता है और जिस प्रकार सूर्य एवं विद्युत्त (पर्वतेभ्यः) मेघों से (गाः वि-तूर्य) प्रशंसति वेदवाणियों या जल धाराओं को देता है उसी भांति (बृहस्पतिः) वह महान् शक्तियों का स्वामी परमेश्वर (स्थिविभ्यः) स्थिर (पर्वतेभ्यः) एवं पालक शक्तियों से युक्त सूर्यादि पदार्थो से जीवन शक्ति के तत्वों को (गाः निरूपे) अनेक भूमियों के प्रति फैलाता है जो भूमियों पर जौ छिटकाये जाते हैं। ये भूमियां (साधु-अर्याः) जो कि उत्तम स्वामियों और वैश्यजनों से युक्त हैं, विद्वान् अतिथि उनमें नेता का कार्य करते हैं जो कि अन्न से परिपूर्ण हैं (स्पार्हाः) चाहने योग्य (सु वर्णाः) उत्तम वर्ण युक्त (अनवद्य-रूपाः) तथा अनिन्दनीय हैं।

भावार्थ-जैसे किसान अपने खेतों में सिंचाई के लिए पर्वतों से जल की धाराओं को काटता है। जिस प्रकार सूर्य और विद्युत पर्वतों से जल की धाराओं को काटते हैं। जिस प्रकार सूर्य और विद्युत मेघों से प्रशंसित वेद वाणियों या जलधाराओं को देता है उसी तरह से महान् परमेश्वर सूर्यादि पदार्थो से जीवन शक्ति के तत्वों को भूमि पर फैलाता है। विद्वान् अतिथि नेता का कार्य करते हैं जो कि अन्न से भरपूर हैं चाहने योग्य उत्तम वर्ण युक्त तथा अनिन्दनीय हैं।

यदा वलस्य पीयतो जसुं भेद बृहस्पतिरग्नि तपोभिरर्कैः।
दद्भिर्न जिह्वा परिविष्टमाद-दाविर्निधीरकृणो दुस्रियाणाम्।।
ऋ. 10.68.6

अर्थ-वेदवाणी पालक ज्ञानवान् व्यक्ति विनाशक अज्ञान के प्रभाव को विदीर्ण कर, अग्नि के समान प्रकाश वाले (अर्केः) अर्चना योग्य वेद मंत्रों से ही (परि-विष्टम्) प्रभु का (आदत्) ग्रहण करे, उसका ज्ञान प्राप्त करे और (उस्रियाणां निधीन्) वाणियों से परम निधि रूप (अकृणोत्) विभिन्न शिष्यों को वेद का ज्ञाता बनाए।

बृहस्पतिरमत हि त्यदासां नाम स्वरीणां सदने गुहायत्।
आण्डेव भित्त्वा शकुनस्य गर्भ मुदुस्त्रियाः पर्वतस्य-त्मनाजत्।।
ऋ. 10.68.7

अर्थ-(बृहस्पतिः) वेद वाणियों में पारंगत परमात्मा (स्वरीणाम्) स्वर सहित शब्दोच्चार से गेय (आसाम्) इन वेद वाणियों के (त्यत् नाम अमत) उस स्वरूप को भी पहचानता है (यत् गुहा) जो कि बुद्धि के भीतर चिन्तनीय रूप से निहित होता है। (यत्) जैसे (शकुनस्य अण्डा इव भित्वा) पक्षी के अण्डों के फोड़ कर गर्भस्थ बच्चा प्रकटता है। उसी भांति (बृहस्पतिः) वेद विद्वान् (त्मना) स्वसामर्थ्य से (शकुनस्य) सर्व शक्तिमान् के (आण्डा भित्वा) अनेक ब्रह्माण्डों का ज्ञान प्राप्त कर (पर्वतस्य) सर्व पालक प्रभु के (गर्भम्) जगत् के ग्रहणीय सामर्थ्य को जाने और (उस्रिया) जल

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन

पंजाब में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को गति देने के लिए, महर्षि दयानन्द के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए तथा पाखण्ड़ और अन्धविश्वास को दूर करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के सम्मेलन का आयोजन 24 जून 2018 रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के कार्यालय गुरूदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में किया जा रहा है। पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के सदस्य महानुभावों से निवेदन है कि इस भव्य समारोह में बढ़-चढ़ कर भाग लें। आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए तथा वेद की पवित्र वाणी को घर-घर तक पहुंचाने के लिए ही इस कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

वर्तमान में आर्य समाज के समक्ष जो चुनौतियां है, उन चुनौतियों से किस प्रकार निपटा जाए? आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को किस प्रकार बढ़ाया जाए? आज जो पाखण्ड़ और अन्धविश्वास बढ़ रहा है, उससे लोगों को कैसे मुक्त किया जाए? लोगों को किस प्रकार आर्य समाज की ओर आकर्षित किया जाए, युवा पीढ़ी को आर्य समाज से किस प्रकार जोड़े तथा वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराएं? आर्य शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले बच्चों को किस प्रकार आर्य समाज से जोड़ा जाए, उनका सर्वांगीण विकास किस प्रकार किया जाए जिससे वे उन संस्थाओं से निकलकर समाज में आदर्श स्थापित कर सकें? इन विषयों पर विचार-विमर्श करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इस कार्यकर्ता बैठक का आयोजन किया है। इस बैठक में पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी एवं अन्य कार्यकर्ता भाग लेंगे। इस अवसर पर सभी आर्य समाजें अपनी-अपनी गतिविधियों पर विचार करते हुए अपने अनुभव सांझा करेंगे तथा अपने-अपने सुझाव प्रस्तुत करेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करते हुए जो कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य हमारे समक्ष रखा था, उस दिशा में हम कितना कार्य कर रहे हैं इस पर विचार किया जाएगा। आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द का मुख्य उद्देश्य लोगों को पाखण्डों, अन्धविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, मूर्तिपूजा के श्राप से मुक्त करना था। अपना आशय स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि मेरा किसी भी नवीन मत को चलाने का लेषमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है अर्थात् यूं कहें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का उद्देश्य संसार में सत्य पर आधारित वेद के सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित करना था। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में स्पष्ट किया कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इस कार्यकर्ता सम्मेलन को करने का उद्देश्य है कि लोगों में महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से कार्य किया जाए। जब तक आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार नहीं होगा तब तक महर्षि दयानन्द के कार्यों के प्रति लोग जागरूक नहीं होंगे। वैदिक सिद्धान्त ही आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त हैं। आज समय की मांग है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक जागरूक होकर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य का जिम्मेदारी के साथ वहन करे। यह काम केवल आर्य समाज कर सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सदैव इस कार्य के लिए प्रयासरत है कि आर्य समाज के लक्ष्य और उद्देश्य की प्रति आम जनता को जागृत किया जाए। इसलिए समय-समय पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा इस प्रकार के कार्यकर्ता सम्मेलनों एवं आर्य महासम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। वेद प्रचार को बढ़ाने के उद्देश्य से सभा में वैदिक साहित्य एवं वेदों के सैट अर्थसहित आधे मूल्य पर दिया जाता है। पंजाब प्रान्त के साथ-साथ अन्य प्रान्तों के लोग भी सभा कार्यालय में प्रचारार्थ साहित्य लेने के लिए आते हैं। इसलिए सभी आर्य समाजें लोगों में निःशुल्क साहित्य बांट कर आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार के कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

आप सभी को विदित है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में 11 नवम्बर को बरनाला में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इससे पूर्व सभा के तत्वावधान में जिला लुधियाना तथा नवांशहर में भी सफल आर्य महासम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। इन महासम्मेलनों की सफलता को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने यह निर्णय किया है कि पंजाब के सभी जिलों में क्रमशः आर्य महासम्मेलन करके लोगों को आर्य समाज के प्रति जागरूक किया जाए। इन महासम्मेलनों में पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं ने अपना अतुलनीय सहयोग देकर अपने संगठन की शक्ति का परिचय दिया है। इसलिए यह श्रृंखला इसी प्रकार बढ़ती रहे इस पर भी कार्यकर्ताओं के सुझाव लिए जाएंगे। इस अवसर पर सभी कार्यकर्ता अपने-अपने सुझाव प्रस्तुत करेंगे। 11 नवम्बर 2018 को बरनाला में होने वाले आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने एवं उसकी तैयारियों में जुट जाने पर चर्चा की जाएगी।

अंत में मैं पंजाब की सभी आर्य समाजों, एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन करता हूं कि 24 जून 2018 रविवार को इस कार्यकर्ता सम्मेलन में बढ़-चढ़ कर भाग लेकर इसे सफल बनाने में अपना भरपूर सहयोग दें। यह कार्यक्रम प्रातः 9 बजे से प्रारम्भ होगा। सर्वप्रथम संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ किया जाएगा। यज्ञ के पश्चात प्रातःराश ग्रहण करके 10:30 से 1:00 बजे तक कार्यकर्ता सम्मेलन होगा जिसमें विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श किया जाएगा। यह कार्यकर्ता सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में होगा। इसलिए सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि अपनी-अपनी आर्य समाजों के प्रधान/मन्त्री/ कोषाध्यक्ष एवं अन्य दो-तीन सदस्य तथा शिक्षण संस्थाओं के प्रधान/ सचिव/ मैनेजर एवं प्रिंसिपल सहित इस कार्यकर्ता सम्मेलन में भाग लें तथा आर्य समाज प्रचार-प्रचार को बढ़ाने के लिए अपने-अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती

घनघोर तिमिर का वक्ष चीर भू पर उतरी थी एक किरन
सन्देश सवेरे का लाई हम करते उसका अभिनन्दन
जड़ता के पूजन अर्चन ने जब चिन्तन का अपमान किया
तूने मानव के मन में चेतना का आह्वान किया
जंजीरों से जकड़े स्वदेश को राह दिखाई थी तूने
जिसको न काल भी बुझा सका वह शमा जलाई थी तूने
घनघोर तिमिर के आंगन में तू बीज उषा के बोता था
आवाज लगायी थी तूने जब सारा भारत सोता था
कर दिया स्वराज्य का शंख ध्वनित तूने देश की वाणी में
तपत्याग तेज के अंगारे पाले अनमोल जवानी में
तूने अनाथ की आह सुनी विधवाओं का क्रन्दन देखा
तूने दोपहरी के नैनों में लहराता सावन देखा
तू अगर न बनता प्रवल वेग निष्ठा स्वराज्य की आंधी का
कभी न पूरा हो सकता सपना भारत में गांधी का
तू महादेश का निर्माता भारत का भाग्य विधाता है
इस धरती का कवि कोई श्रद्धा के पुष्प चढ़ाता है।

हरिश्चन्द्र आर्य, अमरोहा उत्तर प्रदेश

राजा गर्भस्थ माता के समान प्रजा का पालन करे

ले.-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

राजा अपनी प्रजा का पिता के समान पालन करता है। इसलिए पिता कहा गया है किन्तु राजा अपनी प्रजा का पालन माता के समान भी करता है वह बाल्याकाल से ही माता के समान प्रत्येक कदम पर अपनी प्रजा के प्रत्येक अंग रूप नागरिक को अपनी अंगुली पकड़ने के लिए देता है तथा पग पग पर उसका मार्ग दर्शन करता है। यहाँ तक कि जिस प्रकार माता अपनी संतान को नौ महीने तक अपने गर्भ में रखती है। उस प्रकार ही प्रजा के लिए राजा माता के समान होता है तथा यह सम्पूर्ण राज्य क्षेत्र उसके गर्भ के समान ही होता है, जिसमें रहते हुए उसकी प्रजा ठीक उस प्रकार विकास करती है। जिस प्रकार माता के गर्भ में उसकी संतान विकास को प्राप्त होती है। इस सम्बन्ध में वेद का मन्त्र इस प्रकार उपदेश कर रहा है:

विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ-ऽआ रोदसीऽअपृणा-ज्जाय-मानः।

वीडू चिदद्रिमभिनत् पराय-ञ्जाना यदग्निमयजंत यञ्च।।

यजु. १२.२३, ऋग्. १०.८५.६।।

मन्त्र इस सम्बन्ध में उपदेश करते हुए कह रहा है कि हमारे इस जगत् रूपी ब्रह्माण्ड में सूर्य अपने आकर्षण का केंद्र होता है। इस कारण ही वह सब का धारक होता है अर्थात् सब लोक उसे धारण करते हैं। सब लोक सूर्य को क्यों धारण करते हैं ? इस का कारण है कि सूर्य प्रकाश का स्रोत होता है। जिस प्रकाश में हमारी आंख देखने की शक्ति प्राप्त करती है, वह प्रकाश हमें सूर्य से ही मिलता है। यदि सूर्य न हो तो हमारी आँख चाहे कितनी भी सुन्दर हो, साफ़ हो, उसमें देखने की शक्ति हो किन्तु सूर्य के प्रकाश के बिना यह आँख देख ही नहीं पाती। मानो उसमें देखने की शक्ति ही न हो। सूर्य के प्रकाश के बिना आँख कुछ भी तो नहीं देख सकती। इसलिए ही मन्त्र कह रहा है कि सूर्य अपने प्रकाश से सब के लिए धारक है।

मन्त्र कहता है कि प्रजा में से जिस व्यक्ति में सूर्य के सामान गुण हों, उसे ही राजा के पद पर आसीन करना चाहिए। अर्थात् जो व्यक्ति सूर्य के सामान तेजस्वी हो। ब्रह्मचारी से जिसने अपने शरीर को खूब तपा लिया हो। उस के मुख से, उसके आभा मंडल से एक विशेष प्रकार की आभा, एक विशेष प्रकार का तेज टपक रहा हो। एक ऐसा तेज टपक रहा हो, जिस के पास आने से सब प्रकार के दुरित इस प्रकार दूर भाग जावें जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश में आने से सब प्रकार के रोगों के कीटाणु जल कर भस्म हो जाते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति को ही अपना राजा चुनना चाहिए।

मन्त्र आगे कहता है कि राजा पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का सेवन करते हुए सब प्रकार की विद्याओं को पा गया हो अर्थात् वह सब प्रकार की विद्याओं का ज्ञाता हो। कोई ऐसी विद्या न हो जिसका उसे ज्ञान न हो। उसने इतने विशाल राज्य की प्रजा का पालन करना होता है और प्रजा भी वह जो अलग-अलग विषयों को जानती हो, अलग अलग कार्य करती हो तथा राजा से यह आशा करती हो कि राजा उसके क्षेत्र को उन्नत करने, विकसित करने का कार्य करे ताकि उसका व्यवसाय आगे बढ़ सके। यदि राजा किसी एक विद्या को नहीं जानता होगा तो वह उस एक विद्या को उन्नत करने का कार्य कैसे कर सकेगा ? इसलिए मन्त्र के अनुसार राजा सब विद्याओं का ज्ञाता हो तथा उन विद्याओं के प्रसार में उसकी रूचि हो।

राजा के लिए यह भी आवश्यक है कि वह राज्य का धारक हो। इसका भाव यह है कि जिस व्यक्ति को हम राज सत्ता सौंपने जा रहे हैं। उस में इतनी शक्ति हो कि वह जब इस सत्ता को धारण करे तो उसका कोई विरोधी न हो, उसे सत्ता ग्रहण करते समय कोई ललकारने वाला न हो। वह शक्ति से संपन्न हो। यदि कोई व्यक्ति उसकी सत्ता को ललकारने का दुस्साहस करे तो उसमें इतनी शक्ति होनी चाहिए, इतना साहस होना चाहिए कि वह इस प्रकार के व्यक्ति कुचल कर रख दे। सब प्रकार के शत्रुओं का नाश करने की उसके पास शक्ति का होना आवश्यक होता है। इसी प्रकार की शक्ति के बिना उसका शासक रह पाना संभव ही नहीं होता।

इस शक्ति से ही राजा सब प्रकार के सुखों का उत्पादक तथा सब प्रकार के सुखों की वर्षा कर सकता है। यदि शत्रु को देख कर राजा चूहे के समान अपने बिल में घुस जावे तो शत्रु का सामना, शत्रु का मुकाबला कौन करेगा। राजा के अभाव में प्रजा छिन्न भिन्न हो जावेगी तथा शत्रु इस राज्य पर अपना अधिपत्य जमा लेगा। जब राज्य पर शत्रु आसीन हो जावेगा तो प्रजा सुखों के लिए तरसने लगेगी। सुख उसके लिए दिव्या स्वप्न बन जावेंगे। जिस प्रकार मुगलों तथा अंग्रेज के राज्य के समय भारत की जनता दु:खों से भर गयी थी। उस प्रकार की अवस्था आ जावेगी। इसलिए राजा के पास इतनी शक्ति होना आवश्यक है कि जिस से वह अपनी प्रजा के सुखों को बढ़ा कर उसे प्रसन्न रख सके। इस सब के प्रकाश में मन्त्र कहता है कि माता अपने गर्भस्थ शिशु का पालन करने के लिए बड़ी सावधानी से चलती है, बड़ी सावधानी से बोलती है तथा बड़ी सावधानी से अपने जीवन का सब व्यापार करती है ताकि उसके गर्भ में पल रहे बालक को किसी प्रकार का कष्ट न हो तथा समय आने पर पूर्व स्वास्थ्य के साथ इस संसार को देखे, इस संसार में जन्म ले। ठीक इस प्रकार ही राजा की प्रत्येक क्रिया प्रजा के सुख के लिए होती है। वह अपना प्रत्येक कार्य आरम्भ करने से पूर्व ही सोच लेता है कि उसके इस कार्य से प्रजा के किसी अंग को कष्ट तो नहीं होगा। किसी का अहित तो नहीं होगा। इसलिए प्रजापालक राजा का विद्वान्, गुणों से सम्पन्न होना आवश्यक होता है ताकि वह अपनी प्रजा के हितों के अनुसार कार्य करे तथा मातृवत ही गर्भस्थ शिशु के समान अपनी प्रजा का रक्षक हो।

मन्त्र स्पष्ट संकेत करता है कि अपने राजा का चुनाव करते समय प्रजा यह अवश्य देख परख ले कि जिस व्यक्ति को वह अपना राजा चुनने जा रही है, उसमें कितनी मातृत्व शक्ति है ? वह माता के समान कितने गुणों का धारक है ? उसमें अपनी प्रजा से माता के समान स्नेह होगा या नहीं ? इस प्रकार के गुणों की परख करने के पश्चात् यदि वह उसकी कसौटी पर खरा उतरता है, तब ही उसे राजा चुना जावे अन्यथा जनता को कभी सुख प्राप्त नहीं होगा।

आर्य समाज मेन बाजार पठाकोट की गतिविधियां

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट पिछले 62 वर्षों से अनेक प्रकार से पठानकोट वासियों तथा आस-पास के लोगों की सेवा कर रहा है। सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया के भाव को चरितार्थ करते हुए सबके कल्याण के लिए हमेशा प्रयासरत है। आर्य संस्थाओं में विद्या के साथ-साथ संस्कारों के निर्माण का विशेष ध्यान रखा जाता है। आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी योग्य वकील, डॉक्टर, अध्यापक, इंजीनियर ही नहीं बनते बल्कि राष्ट्र के अच्छे नागरिक भी बनते हैं। आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट का दयानन्द धर्मार्थ औषधालय पिछले 25 वर्षों से पठानकोट व दूर-दराज के लोगों की स्वास्थ्य की नि:शुल्क सेवा कर रहा है। शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए वेदों के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अग्निहोत्र के माध्यम से वातावरण को शुद्ध व पवित्र बनाने का कार्य भी कर रहा है। पिछले 60 वर्षों से दैनिक यज्ञ निरन्तर चल रहा है। साप्ताहिक सत्संग के साथ-साथ विशेष धार्मिक व सामाजिक पर्व व उत्सव भी बडी धूमधाम के साथ मनाए जाते हैं। आजकल वातावरण प्रदूषित हो रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान निरन्तर ऊपर नीचे हो रहा है। जिससे मनुष्य के स्वास्थ्य पर बुरा व खतरनाक प्रभाव पड़ रहा है। वातावरण के परिवर्तन से मानवता भंयकर खतरे से जूझ रही है, अनेक प्रकार की बीमारियां फैल रही हैं। आजकल डेंगू का खतरा बना हुआ है। यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है। विशेष हवन सामग्री से बीमारियों की रोकथाम की जा सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद ज्ञान के माध्यम से बीमारियों के ईलाज के लिए अनेक प्रकार की हवन सामग्री की व्याख्या भी की है। विशेष तौर पर डेंगू व मलेरिया आदि की रोकथाम के लिए हवन सामग्री में गुग्गल, पीली सरसों, शुद्ध गन्धक के साथ-साथ गिलोय के मिश्रण से वातावरण में इन बीमारियों के कीटाणु नष्ट होकर वातावरण का शुद्धिकरण करते हैं। इस कार्य हेतु आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट इस प्रकार की विशेष सामग्री बना कर यज्ञ प्रारम्भ कर रहा है। जिससे वातावरण शुद्ध होगा और इन बीमारियों को फैलाने वाले कीटाणु नष्ट होंगे। यज्ञ मानव कल्याण का उत्तम माध्यम है।

-प्रो. स्वतन्त्र कुमार पूर्व कुलपति गुरूकुल कांगड़ी

निराकार ब्रह्म की उपासना कैसे करें ?

ले.-स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उत्तर काशी

इस शंका का समाधान हमें वेदों में ही मिलता हैं। इसको पढ़िये और मनन कीजिये।

ओम् तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रत:।

तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।(यजु. 31.9)

अर्थात्-(तम्) उस (यज्ञम्) पूजनीय (पुरुषम्) परमेश्वर को जो (अग्रत: जातम्) सृष्टि के पूर्व से ही विराजमान है तथा (ये) जो (देवा:) ज्ञानी (साध्या:) साधक (च) और (ऋषय:) ऋषिजन थे (तेन) उन्होंने (बर्हिषि) मानव ज्ञानयज्ञ में (प्रौक्षन्) सींचकर अर्थात् धारण करके (अजयन्त) उसकी पूजा की।

भावार्थ-ज्ञानी, साधक और ऋषिगण सभी उस परमात्मा का अपने अन्तर-हृदय में ध्यान करते हैं। ज्ञान स्वरुप उस परमात्मा की आज्ञानुसार अपने आचरण को पवित्र बनाते हैं। उस परमात्मा की आज्ञा का पालन करना ही उसकी पूजा है।

वह परमात्मा ज्ञानस्वरुप है। मानव मात्र के कल्याण के लिये वह अपने ज्ञान का वेदों के रूप में श्रद्धालु भक्तों के हृदय में प्रकाश करता है।

तस्मात् यज्ञात्सर्वहुत ऋच: सामानि जज्ञिरे।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्मादजायत।।

(यजु. 31.7)

अर्थात्-उस (सर्वहुत: यज्ञात्) सब का कल्याण करने वाले पूजनीय परमेश्वर से ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की उत्पत्ति होती है। वही ज्ञान, विज्ञान, कर्म और उपासना का प्रकाशक है। ज्ञानहीन, अज्ञानी व्यक्ति न ही सत्कर्म कर सकता है और न उपासना कर सकता है। कर्म और उपासना से पूर्व ज्ञान की उपलब्धि अनिवार्य है। ज्ञान की उपलब्धि ध्यान से और वेदों के स्वाध्याय से ही होती है।

देश-देशान्तरों के लोग गंगा, यमुना, गोदावरी आदि नदियों के उद्गम स्थलों की खोज में निकलते हैं। वे उन जलस्त्रोतों को देखकर प्रफुल्लित होते हैं। किन्तु ज्ञान गंगा का उद्गम स्थल कहां है? यह जिज्ञासा विरले लोगों के दिलों में ही पैदा होती है। जब इस विषय पर विचार किया जाता है तो इस ज्ञानगंगा का उद्गम स्थल मस्तिष्क में ही मिलता है। संसार के ज्ञानी हों या अज्ञानी, सभी लोग सोचने-विचारने का काम मस्तिष्क से ही लेते हैं। किन्तु मस्तिष्क तो शरीर में एक मांस का ही पिण्ड है। उसमें ज्ञान कहां से आयेगा? ज्ञान तो चेतन का गुण-धर्म है।

इस शंका का समाधान भी वेदों से ही होता है। अथर्ववेद का मन्त्र है-

तस्मिन् हिरण्यमये कोषे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।

तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद्वै ब्रह्मविदो विदु:।।

(अथर्व. 10.2.31)

अर्थात्-उस हिरण्यमय कोष में जो तीन अरों के ऊपर अवस्थित है। उसी में पूजनीय जीवात्मा का निवास है। उसके अस्तित्व का ज्ञान ब्रह्मविद् व्यक्ति को ही होता है। सामान्यजन अपनी आत्मविस्मृति में ही जीवन जीते हैं। यह अज्ञानता ही जीवात्मा को जन्म-मरण के चक्र में डाले रखती है। योगाभ्यास के द्वारा जब जीवात्मा को अपने स्वरुप का ज्ञान हो जाता है, तो वह जन्म-मरण के इस चक्र से बाहर हो जाता है।

ज्ञान चेतन का ही गुण होता है। जड़ पदार्थों में ज्ञान नहीं होता। आत्मा और परमात्मा दोनों चेतन हैं। दोनों का ही यह ज्ञान गुण है। उनमें भेद केवल यह है कि जीवात्मा अल्पज्ञ है और परमात्मा सर्वज्ञ है। जीवात्मा एकदेशी है, तो परमात्मा सर्वव्यापक है। जीवात्मा व्याप्य है, तो परमात्मा सर्वव्यापक है। मस्तिष्क की हृदय गुहा में जो जीवात्मा विराजमान है उसमें सर्वज्ञ, सर्वव्यापक परमात्मा का भी आवास है। वहीं से यह ज्ञान गंगा नि:सृत हो रही है। जो व्यक्ति जितना एकाग्रचित्त होकर उस परमात्मा की भक्ति में निमग्न होता है, वह उतना ही अधिकाधिक ज्ञान ज्योति से प्रकाशित हो उठता है। परमात्मा अपने ज्ञान को पहाड़-पत्थरों में यूं ही नहीं फेंक देता। वह उस ज्ञानरुपी अनमोल धन को सत्पात्रों को ही प्रदान करता है। योगनिष्ठ तपस्वी आत्मा ही उस ज्ञान को प्राप्त करती है। ज्ञान सम्पन्न होकर जीवात्मा अपने मन, बुद्धि, शरीर, इन्द्रियों के द्वारा उस ज्ञान को कर्म रुप में अवतरित करता है। उत्तम ज्ञान से उत्तम कर्म निष्पन्न होते हैं। जब ज्ञान और कर्म ये दोनों ही व्यक्ति के पवित्रतम हो जाते हैं, तो व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन ही यज्ञमय हो जाता है। ज्ञान ज्योति के प्रकाश में जीवात्मा अपने स्वरुप का प्रत्यक्ष करता है तथा शरीर, मन, बुद्धि से जो कर्म करता है, वे सब निष्काम भाव से ही पूरे करता है। निष्काम कर्म बन्धन का कारण नहीं होता। याज्ञिक भावना से किये गये निष्काम कर्म ईश्वर की पूजा में समर्पित कर दिये जाते हैं, तो यही ईश्वर उपासना का सर्वोत्तम रुप है।

यजुर्वेद का मन्त्र इसी उपासना पर प्रकाश डाल रहा है-

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा:।।

(यजु. 31.16)

अर्थात्-(देवा:) ज्ञानी विद्वान् लोग (यज्ञेन) अपने जीवन यज्ञ से (यज्ञम्) उस पूजनीय यज्ञस्वरुप परमात्मा की (अयजन्त) पूजा करते हैं। उसकी पूजा के (तानि धर्माणि) वे धर्म-कृत्य ही (प्रथमानि) प्रधानतम साधन (आसन्) है। उसी पूजा से (पूर्वे) पूर्वकाल के (साध्या:) साधक लोग और (देवा:) ज्ञानी विद्वान् लोग (यत्र) जहां अमृत सुख भोगते हुए (सन्ति) विराजमान है, वहीं अपने जीवन को यज्ञमय बनाने वाले धीर पुरुष भी (महिमान:) महानता को प्राप्त करते हुए (ते) वे भी (ह) निश्चय से (नाकम्) मोक्ष के आनन्द को (सचन्त) प्राप्त करते हैं। यज्ञ ही ईश्वर पूजा का श्रेष्ठतम उपाय है। यह यज्ञ क्या है? इसको वेद के शब्दों में सुनिये-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया-प्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

एतावद्रूपं यज्ञस्य यद्देवै-र्ब्रह्मणा कृतम्।

तदेतत्सर्वमाप्नोति यज्ञे सौत्रा-मण सुते।।

यजु. 19.31

भावार्थ-परमात्मा सत्य स्वरुप है। उस सत्य स्वरुप परमात्मा का साक्षात्कार करना साधक व्यक्ति का जीवन लक्ष्य होता है। इस जीवन लक्ष्य को पाने के लिये साधक व्यक्ति को चार सीढ़ियां पार करनी पड़ती हैं। उनमें प्रथम सीढ़ी है, सत्य की प्राप्ति और अमृत के त्याग का व्रत लेना। ऐसी प्रतिज्ञा करना कि मरूँ चाहे जीऊं, सत्य को प्राप्त करके ही रहूंगा। यह प्रतिज्ञा ही अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान का पूर्णरूपेण पालन करना, माता-पिता, गुरु, अतिथि, विद्वत्जनों की सेवा-शुश्रूषा, यह सब दीक्षा रुप है। इनका पालन करने वाले व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, आत्मिक उन्नति होती है। जन समाज की सेवा का भी वह पात्र बन जाता है। यही उसकी दक्षिणा है। इस दक्षिणा को पाकर उसके मन में सत्य धर्म के प्रति और श्रद्धा बढ़ जाती है। अन्तत: वह श्रद्धा सत्य स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति का साधन बन जाती है। जिस जीवन में व्रत, दीक्षा, दक्षिणा, श्रद्धा और सत्य अवतरित हो जाते हैं, वह जीवन यज्ञमय हो जाता है। यही जीवन यज्ञ का वास्तविक स्वरूप है। इसी में जीवन की सार्थकता है। यही ईश्वर पूजा का सर्वोत्तम उपाय है। दूसरे सब उपाय व्यक्ति को भटकाने वाले हैं। उत्तम ज्ञान व उत्तम कर्म सब प्रभु चरणों में अर्पित कर देना ही उसकी सेवा है। यह यज्ञरूप प्रभु की जीवन यज्ञ द्वारा पूजा का सर्वोत्तम उपाय है यही उस निराकार ईश्वरोपासना का वैदिक उपाय है।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

योग का उपयोग

ले०-डॉ० निर्मल कौशिक मेन बाजार फरीदकोट

आजकल मानव समाज में 'योग' अथवा 'योगा' बहुत प्रचलित हो रहा है। योग शब्द ही अंग्रेजी भाषा में योगा हो गया है। इसी आकारान्त योगा के कारण विदेशों में भी 'योग' का प्रचलन बढ़ गया है और भारतीय योग विश्वभर में गौरवान्वित हो गया है। 'योग' शब्द का अर्थ है जोड़ना। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि 'योग' किससे जोड़ता है। हम प्राय: देखते है कि श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का प्रत्येक अध्याय किसी न किसी योग शब्द से संयुक्त है जैसे प्रथम अध्याय: अर्जुन विषादयोग, दूसरा सांख्य योग, तीसरा कर्मयोग। इसी प्रकार अठारहवाँ अध्याय-मोक्ष संन्यासयोग आदि। इससे स्पष्ट होता है कि जो अध्याय जिस विषय से जुड़ा है। उसी के अनुसार अध्याय का नाम योग सहित रखा गया है। इसी प्रकार जो भक्ति से जुड़ता है भक्ति योग, जो ज्ञान से जुड़ता है ज्ञान योग आदि। केवल जुड़ना ही काफी नहीं है बल्कि जुड़ने के माध्यम से कर्म में कुशलता प्राप्त करना है। गीता में भगवान श्री कृष्ण स्वयं कहते हैं:

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते

तस्माद् योगाय युज्यस्व योग: कर्मसु कौशलम्। 2/50

अर्थात् हे अर्जुन समबुद्धि युक्त पुरूष पुण्य और पाप दोनों को इसी लोक में त्याग देता है अर्थात् उनसे मुक्त हो जाता है। इससे तू समत्वयोग में लग जा। यह समत्वयोग ही कर्मों में कुशलता है।

महर्षि पतञ्जलि ने हजारों वर्ष पूर्व ईसा पूर्व की द्वितीय शताब्दी में योग को एक दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने 'सूत्र शैली' में योग दर्शन, योग दर्शन सूत्र अथवा पातञ्जल योगदर्शन के रूप में इसे उपलब्ध करवाया है। बाद में इन सूत्रों के भाष्य भी लिखे गए। इन भाष्यों पर अनेक टीकाएं भी लिखी गई।

योग जीवन में क्रियात्मक रूप में कार्य करता है। योग आम आदमी के जीवन को कलात्मक रूप में निरोगी रखने का माध्यम है। योग केवल आसन ही नहीं है। 'स्वामी रामदेव जी के शब्दों में योग वह विद्या है जो हमें स्वस्थ जीवन जीने की कला सिखाती है और असाध्य रोगों से बचाती है। यह आत्मिक चेतना है जिससे हमारे अन्दर और बाहर सब कुछ परिवर्तित हो जाता है। प्राणायाम करने से हमारे शरीर को आक्सीजन, रक्त व ऊर्जा प्राप्त होती है। योगासन स्वास्थ्य, शक्ति एवं दीर्घायु प्रदान करते हैं। योगासन करने से केवल शरीर ही नहीं मन और मस्तिष्क भी पुष्ट होता है। वास्तव में योग शरीर से आत्मा और आत्मा से परमात्मा तक के साक्षात् अनुभव की आध्यात्मिक प्रक्रिया है। इससे मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। अत: योग इहलोक और परलोक दोनों के लिए उपयोगी है।'

योगासन करने से पूर्व कुछ सावधानियां भी अपेक्षित हैं। शौचादि से निवृत होकर ही आसन करें। भोजनादि खाने के छ: सात घण्टे बाद खाली पेट ही आसन करें। आसन करते समय जल्दबाजी न करें। आसन करने के बाद ठंडी या गर्म हवा में न जाए। आसन करते समय ढीले वस्त्र पहनें। दरी, चादर व कम्बल पर ही आसन करें केवल जमीन पर नहीं।

स्त्रियाँ गर्भावस्था व मासिकधर्म की स्थिति में आसन न करें। आसन के बाद मूत्रत्याग अवश्य करें। आसन करते समय मध्य में अथवा अन्त में शवासन अवश्य करें। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि आसन नियमित रूप से करें। आरम्भ में आसन किसी प्रशिक्षित योगाचार्य के देखरेख में ही करें अन्यथा लाभ की जगह हानि भी हो सकती है।

योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। आत्मा और शरीर की शुद्धि का पर्याय ही योग है। योग आत्मा परमात्मा के मिलन का एक साधन है। पद्‌मासन, सिद्धासन, सर्वांग आसन जैसे आसन तो सिद्ध पुरूष अपनी साधना के लिए भी करते हैं। पद्‌मासन का अभ्यास करने वाले साधक के जीवन में एक विशेष आभा प्रकट होती है। इस आसन के द्वारा अनेक योगी, संत, साधक महापुरूष हो गये हैं। श्रम और पीड़ा से रहित एक घण्टा पद्‌मासन पर बैठने वाले व्यक्ति का मनोबल बढ़ता है। इसी प्रकार सिद्धासन को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। अत: योग एक साधना है अलौकिक सिद्धियों को प्रदान करने वाले इस आसन का नाम सिद्धासन पड़ा है। सिद्धयोगियों का यह प्रिय आसन है। इस आसन के निरन्तर अभ्यास करने से शरीर की समस्त नाड़ियों का शुद्धिकरण होता है। प्राण तत्व स्वाभाविक रूप से उर्ध्वगामी होता है पाचन क्रिया नियमित होती है।

योगश्चित्तवृत्ति निरोध: तदा द्रष्टु: स्वरूपे

अवस्थानम् अभ्यास वैराग्य-भ्याम् तन्निरोध।

चित्त की वृत्तियों को रोककर द्रष्टा के स्वरूप में स्थित होने का ही नाम योग है। मन की चंचल वृत्तियों को अभ्यास और वैराग्य द्वारा ही रोका जा सकता है। योग के आठ अंग है जो शरीर इन्द्रियों और चित्त को शुद्ध करते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा अभ्यास योग करने से आत्मा का परमात्मा से योग हो जाता है। इन्हें अष्टांग योग भी कहा जाता है।

1. यम-यह पांच प्रकार का है।

अहिंसा-हिंसा न करना-हिंसा के विषय में नहीं सोचना

सत्य-मन, वचन, कर्म से सत्य पालन

ब्रह्मचर्य-मन व इन्द्रियों पर नियन्त्रण

अपरिग्रह-आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना

अस्तेय-चोरी अथवा अपहरण नहीं करना।

2. नियम भी पांच प्रकार का है।

शौच-मन-शरीर की शुद्धि करना

सन्तोष-पुरूषार्थ से प्राप्त वस्तुओं में सन्तुष्ट होना

तप-दुख सुखादि से संघर्ष करना

स्वाध्याय-धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना

ईश-ध्यान-ईश्वर का ध्यान-स्मरण

यह और नियम का पालन करने से मानव का चरित्र निर्माण होता है और मानवीय गुणों का विकास होता है।

3. आसन-आसन मन-शरीर को सुन्दर, सुडौल और स्वस्थ बनाते है। महर्षि पतञ्जलि ने स्थिर सुखासनम् कहा है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आसन ही सर्वोतम विधि है। क्योंकि शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्-अर्थात् शरीर ही सब धर्मों का साधन है। यही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है। कुछ पशु पक्षियों का वृक्षों का अनुकरण करते हुए उनकी अवस्था के अनुरूप ही आसनों के नाम रखे गए है। जैसे-मयूर आसन, सर्पासन, ताडासन, मत्स्यासन, कुक्कटासन आदि।

4. प्राणायाम-प्राण वायु के श्वास-प्रश्वास अर्थात् सांस अन्दर लेने और बाहर निकालने की प्रक्रिया प्राणायाम है। यह कुम्भक, रेचक, पूरक तीन प्रकार का होता है।

5. प्रत्याहार-बर्हिमुखी इन्द्रियों को अन्तर्मुखी करके चंचल मन व इन्द्रियों को नियन्त्रित करना ही प्रत्याहार कहलाता है।

6. धारणा-किसी देश (स्थान) पर चित्त को लगाना धारणा कहलाता है जैसे नासिका के अग्रभाग भ्रू मध्य अथवा किसी बाह्य वस्तु मूर्ति आदि में चित्त को लगाना ही धारणा कहलाता है।

7. ध्यान-जब चित्तवृतियों एकाग्र होकर ध्येय के प्रति लग जाएं। मन के संकल्प-विकल्प सब कुछ स्थिर हो जाए तो इसे ध्यान कहते है।

8. समाधि-जिस समय आत्मा में ईश्वर यां किसी अन्य वस्तु का ध्यान न रहे उसे समाधि कहते हैं। इसमें ध्याता, ध्यान और ध्येय की त्रिपुटी में ध्येय ही शेष रह जाता है।

योग की क्रियाएँ नियमित रूप से करने से आलस्य दूर होता है, क्षमता बढ़ती है और कार्य करते समय शरीर के समूचे नाडीतन्त्र को वायु, रक्त व ऊर्जा प्राप्त होती है। इससे शरीर के सभी जोड़ों व मासपेशियों को लचीलापन व सबलता प्राप्त होती है। योग की ध्यान अवस्था में मन, मस्तिष्क और शरीर की सभी वृतियां दूर हो जाती है। योग विधिवत रूप से करने पर शारीरिक, बौद्धिक अब आध्यात्मिक विकास होता है। विद्यार्थियों को योग और प्राणायाम अवश्य करना चाहिए।

आत्मा और परमात्मा के संयोग हेतु अनेक मार्गों में 'योग' भी एक लोकप्रिय मार्ग माना गया है। इससे स्वास्थ्य लाभ तो होता ही है साथ ही आत्मा का परिष्कार भी होता है। संस्कारों का उद्‌गम भी होता है। योग का उपयोग तभी है जब हम इसे किसी योग्य प्रशिक्षित आचार्य व शिक्षक की देख रेख में ही करें। पुस्तकें पढ़कर या दूरदर्शन से देखकर योग करने से आपको इसका विपरीत प्रभाव भी हो सकता है। केवल आसन न करें प्राणायाम भी करें और नियमों का पालन करते हुए इसे नियमित रूप से करें तभी योग का उपयोग होगा।

पृष्ठ 2 का शेष-मुक्ति के साधन...

धाराओं के समान अथवा गौओं के तुल्य ज्ञान रस-धारा की दात्री वाणियों को (उत् आजत्) पाएं।

भावार्थ-वेद वाणियों में पारंगत परमात्मा स्वर सहित शब्दोच्चार से गेय वेद वाणियों के उस स्वरूप को भी पहचानता है जो कि बुद्धि के भीतर चिन्तनीय रूप में होता है। जैसे पक्षी के अण्डों को फोड़ कर गर्भरूप बच्चा प्रकटता है उसी तरह वेद का विद्वान् स्वसामर्थ्य से सर्व शक्तिमान् के अनेकों ब्रह्माण्डों का ज्ञान प्राप्त कर प्रभु के सामर्थ्य को जाने। जलधारा के समान ज्ञान रसधारा की दात्री वेद वाणियों को प्राप्त करें।

सोषाम विन्दत्स्व: सो-
अग्निसो अर्केण वि:बबाधे तमांसि।
बृहस्पतिर्गोवपुषो वलस्य
निर्मज्जानं न पर्वणो जभार।।

ऋ. 10.68.9

अर्थ-(स: उषाम्) वह आत्मा साधन मार्ग से, पापमल को भस्म कर देने वाली ऋतम्भरा, ज्योतिष्मती प्रज्ञा को (अविन्दत्) पाता है। (स:स्व:) वह सूर्यवत् तेज युक्त आत्मा को पाता है। (स: अग्निम्) वह अग्नि के समान स्वयं प्रकाशरूप आत्मा को पाता है। (स:) वह (अर्केण) मंत्ररूप ज्ञान के आलोक से अन्धकार के समान (तमांसि वि बबाधे) अनेक अन्धकारों को विनष्ट करता है। (बृहस्पति:) महान् व्रत तथा शक्ति का पालक विद्वान् (गो वपुष:) इन्द्रियों सहित देह रूप में बने (वलस्य) आत्मा को ढ़कने वाले इस काया के बन्धन से (पर्वण:) बद्ध आत्मा को (भज्जा नं न नि:जभार) ऐसे पृथक करता है जैसे पोरू-पोरू में से मज्जा को एवं (वलस्य पर्वण:) फल को घेरने वाली गुठली या अखरोट में से मींगी को निकाला जाता है।

भावार्थ-साधना मार्ग से आत्मा अपने भीतर के अंधकार को हटा कर परमात्मा का साक्षात्कार करने में समर्थ हो जाता है। वह सभी दु:खों से छूट कर मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

साधक की आत्मा को अज्ञान से छुड़ाकर प्रभु उसे मोक्ष प्रदान करते हैं।

हिमेव पर्णा मुषिता वनानि
बृहस्पति ना कृपयद्वलो गा:।
अनानु कृत्यं पुनश्चकार
यात्सूर्य मासा मिथ उच्चरात:।।

ऋ. 10.68.10

अर्थ-(हिमा इव पर्णा) जैसे वसन्त ऋतु में वृक्ष के पत्ते झड़ते हैं उसी प्रकार (बृहस्पतिना) परमात्मा (वनानि मुषिता) नाना भोग बन्धन से उच्छेद्य बन्धन दूर करता है। (वल:) आवरण कारी देह बन्धन (गा:) आत्मा की शक्तियों और इन्द्रिय सामर्थ्य को भी (अकृपयत) त्यागता है। जबकि साधक ऐसी साधना करें कि वह (अपुन: अननुकृत्यम्) पुन: जन्म-मरण में न फंसे और फिर पुन: उसे बन्धन मुक्ति का उद्योग न करना पड़े। (यात्) जब तक भी (सूर्यमासा: भिव उत् चरात्) सूर्य और चन्द्र उदित होवें।

भावार्थ-प्रभु के द्वारा दिए गए वेद के ज्ञान से साधक देह बन्धन से आत्मा को मुक्त कराता है। वेद का ज्ञान ही आत्मा को जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त कराता है।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से तैयार प्रश्नोत्तरी। आशा है आर्य मर्यादा के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

प्र.1-महर्षि दयानन्द कौन थे?
उत्तर-आधुनिक भारत के निर्माता या महान समाज सुधारक थे।
प्र.2-आर्य समाज की स्थापना किसने की?
उत्तर- महर्षि दयानन्द ने।
प्र.3-महर्षि दयानन्द का जन्म कब हुआ?
उत्तर-1824 ई. में।
प्र. 4-महर्षि दयानन्द का जन्म किस ग्राम में हुआ?
उत्तर-टंकारा में।
प्र. 5-टंकारा किस प्रान्त का ग्राम है?
उत्तर गुजरात।
प्र.6-महर्षि दयानन्द की माता का क्या नाम था?
उत्तर-श्रीमती अमृत बाई।
प्र. 7-महर्षि दयानन्द के पिता का क्या नाम था?
उत्तर-श्री कर्षन जी तिवारी।
प्र.8-श्री कर्षन जी का क्या कारोबार था?
उत्तर-बड़े जमीदार थे तथा राज्य के उच्च अधिकारी थे।
प्र.9-महर्षि दयानन्द का बचपन का क्या नाम था?
उत्तर- मूलशंकर।
प्र.10-श्री कर्षन जी ने अपने पुत्र का नाम मूलशंकर क्यों रखा?
उत्तर-क्योंकि वह शिव के अनन्य भक्त थे।
प्र.11-मूलशंकर के कितने भाई थे?
उत्तर-मूलशंकर से छोटे दो और थे।
प्र.12-मूलशंकर की कितनी बहनें थी?
उत्तर-दो बहनें थी।
प्र.13- मूलशंकर की शिक्षा कब प्रारम्भ हुई?
उत्तर-पाँचवे वर्ष में।
प्र.14-मूलशंकर को पाँचवे वर्ष में किसने शिक्षा देनी प्रारम्भ की?
उत्तर-माता-पिता आदि ने।
प्र.15-माता पिता ने क्या शिक्षा प्रारम्भ की?
उत्तर-देवनागरी अक्षर तथा कुल की रीति की शिक्षा।
प्र.16-कुल की रीति की क्या शिक्षा थी?
उत्तर-धर्मशास्त्र के श्लोक तथा शैव मत की शिक्षा।
प्र.17-मूलशंकर का यज्ञोपवीत संस्कार कब हुआ?
उत्तर-आठ वर्ष की आयु में।
प्र.18- यज्ञोपवीत संस्कार करके क्या सिखाया गया?
उत्तर-गायत्री संध्या व उसकी क्रिया।
प्र.19-यज्ञोपवीत के पश्चात क्या पढाना शुरू किया?
उत्तर-यजुर्वेद संहिता से रूद्राध्याय।
प्र. 20-पिता आदि लोग मूल को शिव की किस तरह की पूजा करने को कहते?
उत्तर- मिट्टी का शिवलिंग बनाकर।
प्र.21-मूल शिवलिंग की पूजा नित्य क्यों नहीं कर पाता था?
उत्तर-क्योंकि वह प्रात:काल ही भोजन कर लेता था।
प्र.22-मूल ने शिवलिंग की पूजा किस आयु में पारिवारिक रीति से शुरू की थी?
उत्तर-14 वर्ष के प्रारम्भ में।
प्र.23-मूलशंकर की बुद्धि कैसी थी?
उत्तर-कुशाग्र थी।
प्र.24-14 वर्ष की आयु तक मूलशंकर ने क्या-क्या पढ़ लिया था?
उत्तर-यजुर्वेद सम्पूर्ण, व्याकरण का कुछ भाग व अन्य वेदों के कुछ मन्त्र।
प्र.25-मूलशंकर ने शिवरात्रि का व्रत करने का संकल्प कब लिया?
उत्तर-14 वर्ष की आयु में त्रयोदशी के दिन।
प्र.26-मूलशंकर ने शिवरात्रि का व्रत करने का संकल्प क्यों लिया?
उत्तर-शिव कथा का महातम्य सुनकर।
प्र.27- मूलशंकर ने शिव का क्या महातम्य सुन रखा था?
उत्तर-कि वह कैलाशपति है, डमरू बजाता है और दुष्टों को रूलाता है तथा भक्तों को वर देता है।
प्र.28-मूलशंकर ने कब शिवरात्रि का व्रत रखा?
उत्तर- 14 वर्ष की उम्र में चतुर्दशी को।
प्र.29-मूलशंकर ने शिवरात्रि का व्रत क्यों रखा?
उत्तर- शिव के दर्शन के लिए।
प्र.30-क्या मूलशंकर को शिव के दर्शन हुए?
उत्तर नहीं।

परमात्मा ने मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म के लिये जीवन दिया

आर्य समाज शहीद सिंह नगर जालन्धर के साप्ताहिक सत्संग में मंच पर विराजमान पंडित सुरेश शास्त्री जी, श्री शिवा शास्त्री जी एवं भजन प्रस्तुत करती हुई सोनू भारती जी। जबकि चित्र दो में हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन एवं उपस्थित जनसमूह।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन रविवार को किया गया जिसमें मुख्य यजमान निखिल मल्होत्रा एवं मिरनाल मल्होत्रा जी ने पवित्र पावन वेद मंत्रों से वैदिक संस्कृति से अपना जन्म दिवस मनाया। पंडित सुरेश शास्त्री जी और शिवा शास्त्री जी ने पवित्र पावन वेद मंत्रों से सभी श्रद्धालुओं से आहुतियां डलवाई। आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति के भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर पंडित सुरेश शास्त्री जी ने कहा कि परमपिता परमात्मा ने यह जो शरीर दिया है, मानव जीवन दिया है इसका उपयोग कैसे करना है। यह हमें स्वयं निर्धारित करना है और जब मनुष्य इस संसार में आता है तो परमात्मा सभी को तीन पृष्ठ की डायरी देता है और उसमें भी हैरानी की बात है कि पहला और अन्तिम पृष्ठ परमात्मा ने स्वयं लिख दिया। प्रथम पृष्ठ है जन्म क्या कोई निश्चित कर सकता है। मैंने इस परिवार में जन्म लेना है? जब हम कहीं पर जाते हैं तो अडवांस बुकिंग करवाते हैं परन्तु जब हम संसार में आए हैं तो किसी ने कोई बुकिंग करवाई थी या कोई तैयारी की थी कि मैंने इस परिवार में जन्म लेना है? यह सब व्यवस्था परमात्मा के हाथ में है। हमारे जीवन का यह प्रथम पृष्ठ है। इसे परमात्मा ने स्वयं लिख दिया है। किस परिवार में कैसे माता-पिता के यहां और कैसा वातावरण मिलेगा? कैसा परिवार मिलेगा? यह सब उस परमात्मा के हाथ में है और अन्तिम पृष्ठ मरण का, मृत्यु का कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने कब मरना है। मैंने कब इस दुनिया से जाना है परन्तु इस दो पृष्ठों के बीच में एक जो बीच का पृष्ठ है वह परमात्मा ने हमें लिखने के लिये दिया है। इसका नाम है जिन्दगी। इस पृष्ठ को स्वयं लिख सकते हैं जैसा जैसा लिखेंगे वैसा वैसा आप का जीवन बनता जायेगा। आप इस पेज पर कर्म रूपी स्याही से जैसा चित्र बनाएंगे उतना ही आपके जीवन में निखार आएगा। इस पृष्ठ को लिखने की पूरी छूट परमात्मा ने आपको दी है। कर्म करने में हर व्यक्ति स्वतंत्र है इसीलिये निश्चय आपने करना है कि पृष्ठ कैसे भरना है। अच्छे कर्म करते हुये अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाना है या बुराईयों में फंसकर इस अनमोल शरीर को नष्ट करना है। जिस वैदिक संस्कृति के हम अनुयायी हैं उसमें बच्चों को प्रेरणा दी जाती है कि जो बच्चे प्रतिदिन अपने माता पिता के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेते हैं, बड़े वृद्धों की सेवा करते हैं, उनके अंदर चार गुणों की वृद्धि होती है और वह चार गुण हैं आयु, विद्या, यश, फल। जिस व्यक्ति में ये चार गुण आ जाते हैं उसका जीवन हमेशा उन्नति की ओर अग्रसर हो जाता है।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य, संरक्षक ईश्वर चंद्र रामपाल, महामंत्री हर्ष लखनपाल, सतपाल मल्होत्रा, ओम मल्होत्रा, भूपेन्द्र उपाध्याय, सुरेन्द्र अरोडा, विजय चावला, चौधरी हरिचंद, राजीव कुन्दरा, सुनीता भाटिया, ईशान मल्होत्रा, आरती मल्होत्रा, राजीव शर्मा, अश्विनी डोगरा, लवलीन कुमार, दिव्या आर्य, सुदर्शन आर्य, नलिनी उपाध्याय, उर्मिला भगत, अनु आर्य, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, रानी अरोड़ा, कमलेश घई, ओम प्रकाश मेहता, राजेश वधवा, राघव मल्होत्रा, नीलम गुप्ता, पवन शुक्ला, उमा शुक्ला, अमित सिंह, नरेन्द्र कुमार, वेंकटेश्वर मितु, रवि कुमार, ज्ञान अग्रवाल, ललित मोहन कालिया, प्रवीण मितु, मोहन लाल, मनु आर्या, आर्य मित्र मित्तल, अनिल मिश्रा, प्रिया मिश्रा, निखिल लखनपाल व अन्य नगर निवासियों ने भाग लिया।

श्रीमती सुमन मल्होत्रा जी आर्य समाज मोगा की नई प्रधाना

आर्य समाज मोगा का चुनाव दिनांक 3 जून 2018 रविवार को सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम आर्य समाज के सभी सभासदों ने मिलकर यज्ञ किया। यज्ञ के पश्चात चुनावी कार्यवाही प्रारम्भ हुई। तत्पश्चात श्री नरेन्द्र सूद जी ने इन्द्रजीत भाटिया और श्री विपिन धवन जी फिरोजपुर का नाम पर्यवेक्षक के रूप में पेश किया जिन्हें सर्वसम्मति से चुनाव का पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया। इन दोनों महानुभावों की देख रेख में आर्य समाज की चुनावी प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम आर्य समाज मोगा के कोषाध्यक्ष श्री जोगिन्द्र सिंगला ने गत वर्ष 2017-18 के सम्पूर्ण आय-व्यय का ब्यौरा पढ़ कर सुनाया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। प्रधान श्री नरेन्द्र सूद जी ने अपनी कार्यकारिणी को भंग करते हुए प्रधान पद से त्याग पत्र दिया जिसे चुनाव अधिकारियों ने स्वीकार किया। चुनावी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए चुनाव अधिकारियों ने प्रधान पद के लिए नाम प्रस्तुत करने को कहा। श्री नरेन्द्र सूद ने प्रधान पद के लिए श्रीमती सुमन मल्हौत्रा का नाम पेश किया। चुनाव अधिकारी के बार बार कहने पर भी कोई और नाम प्रधान पद के लिये पेश नहीं किया गया। तब श्री नरेन्द्र सूद जी ने कहा कि 10 मिनट का समय अन्य नाम पेश करने के लिये दिया जाए जिसे चुनाव अधिकारियों ने मंजूर कर लिया। इस अवधि के दौरान अन्य कोई नाम प्रस्तावित न होने के कारण श्रीमती सुमन मल्होत्रा को सर्वसम्मति से आर्य समाज मोगा का प्रधान घोषित किया गया। आर्य समाज मोगा का चुनाव श्री नरेन्द्र सूद जी, श्री सत्य प्रकाश जी उप्पल, श्री गोपाल कृष्ण, श्री प्रियतम देव सूद, श्रीमती स्वर्ण शर्मा, श्री बोधराज मजीठिया, श्री जगदीश अग्रवाल, श्री अश्विनी कुमार शर्मा (मटटू), डा. देव प्रकाश चुघ आदि वरिष्ठ सदस्यों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कुल 80 सभासदों में से 66 सभासद ही चुनाव प्रक्रिया में शामिल हुये।

श्रीमती सुमन मल्होत्रा जी आर्य समाज मोगा की रविवार 3 जून 2018 को प्रधाना चुनी गई। आर्य समाज के सभासदों ने उनका पुष्पमालाएं पहना कर स्वागत किया।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।